विजयवर्गीय (वैश्य) राजसेवक परिषद्, जयपुर

"संगम", विजयवर्गीय सामुदायिक केंद्र एवं छात्रावास भवन,

Sector 26, Pani ki Tanki ke Pass, NRI Circle, Pratap Nagar, Jaipur, Rajasthan 303906

डॉ0 आर0जी0 विजयवर्गीय
पशु वैज्ञानिक (से.नि.)
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
(9352734572)

गौ पालन एक लाभदायक उद्योग

बेरोजगारी की समस्या को यदि वास्तव में हल किया जाना है तो गाय का पालन–पोषण और संरक्षण करना आवश्यक है हमारे पूर्वजों ने क्षेत्रीय जलवायु व आवश्यकतानुसार भारतीय गायों की विभिन्न गौ–नस्लों के संरक्षण व विकास किया एवं पालन पोषण (वैज्ञानिक) ठीक ढंग से होता था। गाय के दूध, घी, दही, छाछ, गोबर, मूत्र आदि की विशेषता को सभी धार्मिक प्रवचनों में उल्लेख किया जाता है लेकिन आज की स्थिति यह है कि "नस्ल" गाय का गौ–वंश नहीं के बराबर है जो अनुपयोगी होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण अविवेक प्रजनन और गौ–पालन के ज्ञान का अभाव है।

गौ–पालन एक लाभदायक उद्योग के साथ में विकसित किया जा सकता है तथा स्वः रोजगार का साधन हो सकता है साथ ही परिवार के लिए शुद्व दूध, घी उपलब्ध हो सकता है व कुपोषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।

एक स्वस्थ्य गाय को लगभग प्रतिवर्ष एक बछडे या बछडी को जन्म देना चाहिए तथा एक बछडी को लगभग तीन वर्ष की उम्र में गाय बन जाना चाहिए लेकिन गोपालन के ज्ञान के अभाव में बछडी औसतन 5–6 वर्ष की आयु में प्रजनन योग्य होती है तथा गाय भी दुबारा 24–26 माह मे ब्याती है जिसको लगभग प्रतिवर्ष ब्याना चाहिए। इससे गौ पालक को लाभ के बजाय आर्थिक नुकसान होता है।

सूक्ष्म रूप में इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि गाय के जीवन चक्र में मुख्यतः तीन अवस्था होती है:– 1. बटवार (growth) 2. प्रजनन (Breeding) 3. उत्पादन (mirs)

ज्ञान के अभाव मे पशुपालक का स्थान दूध उत्पादन पर ही रहता है और होना भी चाहिए लेकिन यदि प्रजनन पर ध्यान नही देगें तो समय पर गाय नही ब्याएगी। और उस लम्बे समय में अनुपादक रहकर आर्थिक हानि का कारण बनेगी। क्योंकि गाय ब्याएगी तभी दूध देना शुरू करेगी। वरना/अनुपादक खर्च का भार बढाएगी।

दूसरे बटवार का पहलू देखें तो जिस दिन गर्भ ठहरता है उसी दिन से बदवार शुरू हो जाती है और नौ माह बाद गाय ब्याती है। लेकिन ज्ञान के अभाव में या तो जब गाय दूध देना बन्द कर देती है। तब ग्यामिक कराते है। या ब्या तमे ग्यामिन भराते है तो दूध देने के बाद दाना– बांटा खिलाना बन्द कर देते है तो इस स्थिति मे गर्भ में पल रहे बच्चे का विकास/बदबार कैसा होगा? निश्चित रूप से गर्भ मे यदि बछडी है तो उसके धन व आय के बदवार कम होगा तो गाय बनने पर दुग्ध उत्पादन क्षमता उसी प्रकार की होगी।

अतः गौ पालक को निम्न पहलूओं का ज्ञान होगा तों निश्चित रूप से गौ पालन के आर्थिक लाभ कर स्वरोजगार सम्भव है।

1. प्रजनन– कब, किससे, कैसे कराए
2. आहार– कब, क्या, किसको, कितना खिलाए।
3. आवास एव पानी की व्यवस्था
4. स्वस्थ्य रक्षा– समय पर टीका करण एवं परजीवियों से बचाव।

मोटे रूप में एक गाय पर रूपये 200/– प्रतिदिन खर्च होता है। जब वह प्रतिदिन 10 लिटर दूध 50/–प्रति लि0 दे तो क्या यह स्वरोजगार मे सहायक नही होगी।

Over Please